श्रीरामकृत

श्री हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र

सटीक

11587

प्रेषक — गोवर्धनदास बिन्नानी

11587

श्रीरामकृत

श्री हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र

सटीक

श्री ____________________

____

को सादर-सप्रेम भेंट

____

प्रेषक—गोवर्धनदास बिन्नानी

॥ श्री परमात्मनेनमः ॥

पूज्य

सौम्य मूर्ति — ब्रह्मयोगी

सरल हृदय — परम परोपकारी

ब्रह्मलीन — नित्यलीला लीन

पिताजी श्री अवन्तीलालजी बिन्नानी — **सद्गुरुजी श्री गोरधनजी महादेवजी शर्मा**

एवं

श्रद्धेय सास-स्वसुर

वात्सल मयी — चिरस्मरणीय

देवी-स्वरूपा — कर्मयोगी

स्वर्गीया — स्वर्गवासी

श्रीमती रंभाबाई सोड़ानी — **श्री गोरधनजी सोड़ानी**

को

सादर समर्पित

—गोवर्धनदास बिन्नानी

शोध संस्थान
11587
अयोध्या
सेवा ट्रस्ट

श्रीहरिः

निवेदन

卐

ईश्वरीय प्रेरणास्वरूप

यह पुस्तिका आपके समक्ष है ।

यदि आप श्रद्धा-भक्ति सहित इसका

एक बार भी पठन-पाठन करें तो मैं स्वयं को

कृतार्थ समझूँगा ।

पारायण के इच्छुक सज्जन निःसंकोच

निःशुल्क प्रति प्राप्त करने का

अनुग्रह करें ।

○

विनीत

६८, मालगंज,
इन्दौर ४५२००२
दूरभाष : ३८३९५

गोवर्धनदास बिन्नानी

श्रीरामकृत

श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्र

श्रीहनुमानजी जिनके इष्ट देवता हैं, उनको तो श्रीहनुमत्-सहस्रनाम का पाठ प्रतिदिन करना ही चाहिये, परन्तु साधारणतः कोई भी साधक इस सहस्रनाम का पाठ करके लाभ उठा सकता है। यह हनुमत्सहस्रनाम 'बृहज्ज्योतिषार्णव' से लिया गया है।

देवाराधना में सहस्रनाम का पाठ एक विशेष स्थान रखता है। इस कारण प्रायः सभी देवताओं के पृथक्-पृथक् सहस्रनाम उपलब्ध हैं। प्रत्येक देवता के दो स्वरूप होते हैं—सगुण और निर्गुण। सगुण स्वरूप में उनकी लीला, रूप, गुण, प्रभाव का समावेश होता है और निर्गुण स्वरूप में वे परब्रह्म हैं। अतः सहस्रनाम में इन दोनों रूपों का दर्शन होता है। ब्रह्मस्वरूप में प्रकृति-पुरुष, देवी-देवता, ऋषि-मुनि आदि सबका समावेश होता है। अतएव सहस्रनाम में उन सबका इष्ट देवता के नाम के रूप में उल्लेख किया जाता है। इष्ट देवता सर्वमय हैं, सर्वस्वरूप है, क्योंकि वे परब्रह्म हैं। श्रीहनुमत्सहस्रनाम में श्रीविष्णु भगवान् के प्रायः सभी अवतारों को श्रीहनुमानजी के नाम के रूप में वर्णन किया गया है। ऋषियों, देवताओं तथा सृष्टि की महान् ऐश्वर्यशाली विभूतियों को श्रीहनुमानजी के नाम के रूप में वर्णन किया है। इस प्रकार सहस्रनाम के माध्यम से अनायास ही 'वासुदेवः सर्वम्' का पाठ साधक को पढ़ा दिया जाता है। दूसरे शब्दों में सहस्रनाम में जो नानात्व है, वह एकत्व में अन्तर्हित है। एक सच्चिदानन्दघन परमात्मा ही राम, कृष्ण, विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश, हनुमान आदि भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होकर विभिन्न लीलाएँ करते हैं। साधक अपनी-अपनी रुचि, योग्यता, विश्वास एवं श्रद्धा के अनुसार उनमें से किसी एक रूप की उपासना कर अन्त में उसी एक परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ साधक को अपने आराध्य के एक विशेष स्वरूप, गुण, प्रभाव एवं लीला का स्मरण होता है। इष्टदेव के

विभिन्न नामों के साथ विभिन्न लीलाओं का स्मरण, चिन्तन एवं कीर्तन कर साधक भाव-विभोर होता रहे, सहस्रनामों के उल्लेख का यही रहस्य प्रतीत होता है। सहस्रनाम का पाठ नैष्ठिक ब्राह्मण से या किसी साधक से करवाकर उसका श्रवण करने से भी मनोवांछित फल प्राप्त होताहै। मुख्य रूप से मंगलवार और शनिवार—ये दोनों दिन श्रीहनुमानजी के पूजा-अनुष्ठान के लिये विशेष मान्य हैं। श्रीहनुमानजी के या श्रीरामजी के विग्रह के सामने इस सहस्रनाम का पाठ श्रद्धा-प्रेमपूर्वक नियमित रूप से करना चाहिये।

इस स्तोत्र का सर्वाधिक वैशिष्ट्य यह है कि स्वयं श्रीरामचन्द्रजी ने इस हनुमत्सहस्रनाम का पाठ करके लाभ उठाया है, यह इसकी भूमिका से ही ज्ञात होता है तथा इसकी फलश्रुति से इसकी विशेष महिमा जानी जा सकती है। सहस्रनाम के प्रत्येक नाम का अर्थ समझते हुए निष्काम भाव से श्रद्धा-प्रेमपूर्वक पाठ करने पर मनुष्य को परम शान्ति और परमानन्दस्वरूप परम पद की प्राप्ति तथा परम दुर्लभ भगवत्प्रेम की भी प्राप्ति हो सकती है। इसीलिये यहाँ इस स्तोत्र को अर्थ सहित प्रकाशित किया जा रहा है। एक-एक नाम को चतुर्थी विभक्ति के साथ जोड़कर 'नमः' पद के साथ पढ़कर पुष्प अर्पण करने का विधान भी पाया जाता है। जैसे 'श्रीहनुमते नमः', 'श्रीश्रीप्रदाय नमः', 'श्रीवायुपुत्राय नमः'—इत्यादि। अस्तु, जिस विधि से हो सके, वैसे ही साधक को अपने इष्ट देवता की कृपा-प्राप्ति के लिये समाहित चित्त से श्रद्धा प्रेमपूर्वक सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

ध्यान

प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम्।
सुग्रीवादियुतं ध्यायेत् पीताम्बरसमावृतम्॥
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम्।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालंकारभूषितम्॥

जो तपे हुए सुवर्ण के समान कान्तियुक्त हैं, जिनके नेत्र अत्यन्त लाल हैं, जो पीताम्बर धारण किये हैं, समुद्र को गौ के खुर के समान सहज ही लाँघ जाते हैं, अपनी पूँछ को मस्तक के ऊपर उठाये रहते हैं, सुग्रीव आदि वानर-वृन्द से युक्त, सब प्रकार के अलंकारों से भूषित, ज्ञान-मुद्राधारी, परमात्मास्वरूप श्रीहनुमानजी का ध्यान करे।

सहस्रनाम

श्रीरामचन्द्र उवाच—

हनुमन्श्रीप्रदो वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ।
अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥ १ ॥

श्री रामचन्द्रजी बोले—१. हनुमान्—जिनकी ठुड्डी विशाल और टेढ़ी है, २. श्रीपदः—शोभा प्रदान करने वाले, ३. वायुपुत्रः—पवनदेव के पुत्र, ४. रुद्रः—जो रुद्र के अवतार हैं, ५. अनघः—निष्पाप हैं, ६. अजरः—जरा (बुढ़ापा) से रहित हैं, ७. अमृत्युः—जिनकी मृत्यु नहीं हो, ८. वीरवीरः—वीरों में परम वीर, ९. ग्रामवासः—जो गाँवों में वास करते हैं, १०. जनायः—जो लोगों को आश्रय देते हैं ॥१॥

धनदो निर्गुणोऽकायो वीरो निधिपतिर्मुनिः ।
पिङ्गाक्षो वरद वाग्मी सीताशोकविनाशनः ॥ २ ॥

११. धनदः—धन देने वाले, १२. निर्गुणः—सत्त्वादि गुणों से रहित, १३. अकायः—प्राकृत देह से रहित, १४. वीरः—रणभूमि में शत्रुओं को पछाड़ने वाले, १५. निधिपतिः—नवनिधियों के स्वामी, १६. मुनिः—वेद शास्त्रों के तत्त्व को जानने वाले, १७. पिङ्गाक्षः—पीली-पीली आँखों वाले, १८. वरदः—अभीष्ट वर देने वाले, १९. वाग्मी—प्रशस्त वक्ता, २०. सीताशोकविनाशनः—सीता के शोक को मिटाने वाले ॥२॥

शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो रसाधरः ।
पिङ्गकेशः पिङ्गरोमा श्रुतिगम्यः सनातनः ॥ ३ ॥

२१. शिवः—मङ्गलमय, २२. सर्वः—सर्वस्वरूप, २३. परः—प्रकृति से अतीत, २४. अव्यक्तः—जिनका स्वरूप अव्यक्त है, २५. व्यक्ताव्यक्तः—जो प्रेमी भक्तों के सामने व्यक्त हैं और भक्तिशून्य जन के लिये अव्यक्त हैं, २६. रसाधरः—पृथ्वी को धारण करते हैं, २७. पिङ्गकेशः—पीले बाल वाले, २८. पिङ्गरोमा—पीले रोम वाले, २९. श्रुतिगम्यः—श्रुतियों के द्वारा जो गम्य हैं, प्राप्य हैं, ३०, सनातनः—सदा रहने वाले ॥३॥

अनादिर्भगवान् देवो विश्वहेतुर्निरामयः ।
आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः ।। ४ ।।

३१. अनादिः—उनका कोई आदि नहीं, अतः वे अनादि हैं, ३२. भगवान्—ऐश्वर्यमान्, ३३. देवः—अतिदीप्तरूप, ३४. विश्वहेतु—विश्व के कारण, ३५. निरामयः—रोगरहित, ३६. आरोग्यकर्त्ता—नीरोग करने वाले, ३७. विश्वेशः—विश्व के ईश, ३८. विश्वनाथः—विश्व के स्वामी, ३९. हरीश्वरः—वानरों के स्वामी ।।४।।

भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः ।
विश्वम्भरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वपः ।। ५ ।।

४०. भर्गः—तेजःस्वरूप, ४१. रामः—जिनमें भक्त लोग रमण करते हैं, ४२. रामभक्तः—राम के भक्त, ४३. कल्याणप्रकृतिः—कल्याण करना जिनका स्वभाव हैं, ४४. स्थिरः—पर्वत के समान अचल, ४५. विश्वम्भरः—विश्व का भरण-पोषण करने वाले, ४६. विश्वमूर्तिः—विश्व जिनकी मूर्ति है, ४७. विश्वाकारः—जो सर्व स्वरूप है, ४८. विश्वपः—जो विश्व का पालन करते हैं ।।५।।

विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः ।
विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ।। ६ ।।

४९. विश्वात्मा—जो विश्व की आत्मा हैं, ५०. विश्वसेव्यः—सारे विश्व के सेवनीय, ५१. विश्वः—जो विश्व हैं, ५२. विश्वहरः—विश्व के हर्त्ता, ५३. रविः—सूर्यस्वरूप, ५४. विश्वचेष्टः—विश्व के हित में चेष्टा करने वाले, ५५. विश्वगम्यः—विश्व के प्राणिमात्र के प्राप्त करने योग्य, ५६. विश्वध्येयः—सबके ध्यान करने योग्य, ५७. कलाधरः—कलाओं को धारण करने वाले ।।६।।

प्लवंगमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो वैद्यो वनेचरः ।
बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्यः सखा ह्यजः ।। ७ ।।

५८. प्लवंगमः—उछलते-कूदते चलने वाले, ५९. कपिश्रेष्ठः—वानरों में श्रेष्ठ, ६०. ज्येष्ठः—महान्, ६१. वैद्यः—भवरोग के चिकित्सक, ६२. वनेचरः—सीताजी की खोज में वन-वन भटकने वाले, ६३. बालः—

बालक के समान निश्चल अथवा बालरूप हो सुरसा के मुँह में प्रवेश करने वाले, ६४. वृद्धः—बढ़कर पर्वताकार होने वाले, ६५. युवा—सदा तरुण-स्वरूप, ६६. तत्त्वम्—संसार के कारणस्वरूप, ६७. तत्त्वगम्यः—तत्त्व रूप में जानने योग्य, ६८. सखा—सब के सखा, ६९. अजः—अजन्मा ।।७।।

अंजनासूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ।
भूर्भुवः स्वर्महर्लोको जनलोकस्तपोऽव्ययः ।। ८ ।।

७०. अञ्जनासूनुः—माता अञ्जना के पुत्र, ७१. अव्यग्रः—कभी व्यग्र न होने वाले, ७२. ग्रामख्यातः—गाँव-गाँव में प्रसिद्ध, ७३. धराधरः—पृथ्वी को धारण करने वाले—पर्वताकार, ७४. भूः—पृथ्वीलोकस्वरूप, ७५. भुवः—भुवर्लोकस्वरूप, ७६, स्वः—स्वर्गलोकस्वरूप, ७७. महर्लोकः—महर्लोकस्वरूप, ७८. जनलोकः—जनलोकस्वरूप, ७९. तपः—तपलोक-स्वरूप, ८०. अव्ययः—अविनाशीस्वरूप ।।८।।

सत्यमोङ्कारगम्यश्च प्रणवो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ।। ९ ।।

८१. सत्यम्—संतों के लिये हितकर, ८२. ॐकारगम्यः—ॐकार के द्वारा प्राप्त होने वाले, ८३, प्रणवः—ॐकारस्वरूप, ८४. व्यापकः—सर्वव्यापी, ८५. अमलः—दोषरहित, ८६. शिवधर्मप्रतिष्ठाता—पाशुपत अथवा कल्याण-धर्म को प्रतिष्ठित करने वाले, ८७. रामेष्टः—जिनके श्रीराम इष्टदेव हैं, ८८. फाल्गुनप्रियः—जो अर्जुन के प्रिय हैं ।।९।।

गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नः पुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ।।१०।।

८९. गोष्पदीकृतवारीशः—समुद्र को जलपूरित गोपद के समान लाँघने वाले, ९०. पूर्णकामः—जिनकी सारी कामनाएं पूर्ण हैं, ९१. धरा-पतिः—पृथ्वी के स्वामी, ९२. रक्षोघ्नः—राक्षसों को मारने वाले, ९३. पुण्डरीकाक्षः—श्वेत कमल के समान नेत्र वाले, ९४. शरणागत-वत्सलः—शरण में आये हुए पर कृपा करने वाले ।।१०।।

जानकी-प्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥११॥

९५. जानकीप्राणदाता—जानकी को जीवन प्रदान करने वाले, ९६. रक्षःप्राणापहारकः—राक्षसों का प्राण नाश करने वाले, ९७. पूर्णः-पूर्णकाम, ९८. सत्यः—सत्यस्वरूप, ९९. पीतवासाः—पीला वस्त्र धारण करने वाले, १००. दिवाकरसमप्रभः—सूर्य के समान तेजस्वी ॥११॥

देवोद्यानविहारी च देवताभयभंजनः ।
भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥१२॥

१०१. देवोद्यानविहारी—देवताओं के नन्दन-वन में विहार करने वाले, १०२. देवताभयभञ्जनः—देवताओं के भय को नष्ट करने वाले, १०३. भक्तोदयः—भक्तों की उन्नति करने वाले, १०४. भक्तलब्धः—भक्तों के द्वारा प्राप्त, १०५. भक्तपालनतत्परः—भक्तों की रक्षा में तत्पर ॥१२॥

द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
अक्षघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥१३॥

१०६. द्रोणहर्ता-द्रोणचल को उखाड़कर लाने वाले, १०७. शक्ति-नेता—शक्तियों के संचालक, १०८. शक्तिराक्षसमारकः—शक्तिशाली राक्षसों को मारने वाले, १०९. अक्षध्नः—अक्षकुमार को मारने वाले, ११०. रामदूतः-भगवान् श्रीरामचन्द्र के दूत, १११. शाकिनीजीवहारकः-शाकिनी का प्राण हरण करने वाले ॥१३॥

बुबुकारहताराातिर्गर्वपर्वतमर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥१४॥

११२. बुबुकारहतारातिः—बुबुकार-ध्वनि से शत्रु का नाश करने वाले, ११३. गर्वपर्वतमर्दनः—गर्वरूपी पर्वत को चूर-चूर करने वाले, ११४. हेतुः—कारणरूप, ११५. अहेतुः—कारणरहित, ११६. प्रांशुः—बहुत उन्नत, ११७. विश्वभर्त्ता—विश्व का भरण-पोषण करने वाले, ११८. जगद्गुरुः—सारे संसार के गुरु ॥१४॥

जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ।
जगद्धितो हरिः श्रीशो गरुडस्मयभंजनः ॥१५॥

११९. जगन्नेता—संसार के नेता, १२०. जगन्नाथः—संसार के स्वामी, १२१. जगदीशः—जगत् के ईश, १२२. जनेश्वरः-भक्तों के ईश्वर, १२३. जगद्धितः—संसार का हित करने वाले, १२४. हरिः—पापों को हर लेने वाले, १२५. श्रीशः—शोभा के स्वामी, १२६. गरुड़स्मयभञ्जनः—गरुड़ के गर्व को नष्ट करने वाले ॥१५॥

पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितविक्रमः ।
ब्रह्मपुच्छः परब्रह्मपुच्छो रामेष्टकारकः ॥१६॥

१२७. पार्थध्वजः अर्जुन के ध्वज-चिह्न, १२८. वायुपुत्रः--वायु के पुत्र, १२९. अमितपुच्छः-अपरिमिति पूँछ वाले, १३०. अमितविक्रमः-असीम पराक्रम वाले, १३१. ब्रह्मपुच्छः—जिनकी पूँछ वर्द्धनशील है, १३२. परब्रह्मपुच्छः—जिनका परब्रह्म आधार है, १३३. रामेष्टकारकः—जो श्रीराम के अभीष्ट कार्य को सिद्ध करते हैं ॥१६॥

सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।
कल्पस्थायी चिरंजीवी तपनश्च सदाशिवः ॥१७॥

१३४. सुग्रीवादियुतः—सुग्रीवादि वानरों से युक्त, १३५. ज्ञानी—ज्ञान-सम्पन्न, १३६. वानरः—वन में रहने वालों की रक्षा करने वाले, १३७. वानरेश्वरः—वानरों के स्वामी, १३८. कल्पस्थायी—कल्प पर्यंत रहने वाले, १३९. चिरंजीवी--चिरकाल तक जीवित रहने वाले, १४०. तपनः—सूर्य-सदृश तेजस्वी, १४१. सदाशिवः—सदा कल्याण-स्वरूप ॥१७॥

संनतः सद्गतिर्भुक्तिमुक्तिदः कीर्तिदायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीपदः शिवः ॥१८॥

१४२. संनतः—विद्या के द्वारा जो सम्यक् रूप से विनयावनत हैं, १४३. सद्गतिः—संतों की गति हैं, १४४. भुक्तिमुक्तिदः- भुक्ति और मुक्ति को देने वाले, १४५. कीर्तिदायकः—कीर्ति प्रदान करने वाले,

१४६. कीर्तिः—कीर्तिस्वरूप, १४७. कीर्तिप्रदः—यशस्वी बनाने वाले, १४८. समुद्रः—जो श्रीराम की मुद्रा या मुद्रिका साथ लिये हुए हैं, १४९. श्रीपदः—बुद्धि या ऐश्वर्य प्रदान करने वाले, १५०. शिवः—संसार का उच्छेद करने वाले ।।१८।।

भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ।
उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशनः ।।१९।।

१५१. भक्तोदयः-भक्त के लिये प्रकट होने वाले, १५२. भक्तगम्यः-भक्त द्वारा प्राप्य होने वाले, १५३. भक्तभाग्यप्रदायकः—भक्त के लिये भाग्यप्रदायक, १५४. उदधिक्रमणः—समुद्र लाँघने वाले, १५५. देवः—देवस्वरूप, १५६. संसारभयनाशनः-संसार के भय का नाश करने वाले ।।१९।।

वार्धिबन्धनकृद् विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ।
लङ्कारि कालिपुरुषो लङ्केशगृहभंजनः ।।२०।।

१५७. वार्धिबन्धनकृत्—समुद्र पर सेतु बाँधने वाले, १५८. विश्व-जेता--विश्व को जीतने वाले, १५९. विश्वप्रतिष्ठितः--विश्व में प्रतिष्ठित, १६०. लङ्कारिः--लङ्का के शत्रु, १६१ कालपुरुषः-कालरूपी पुरूष, १६२. लङ्केशगृहभञ्जनः--रावण के महलों को नष्ट करने वाले ।।२०।।

भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ।
श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लङ्काप्रासादभंजकः ।।२१।।

१६३. भूतावासः भूतों के आवास स्थल हैं, १६४. वासुदेवः--विश्व में व्यापक, १६५. वसुः—वसु स्वरूप, १६६. त्रिभुवनेश्वरः-त्रिभुवन के स्वामी, १६७. श्रीरामरूपः-जो श्रीराम-तुल्य हैं, १६८. कृष्णः-चित्त को आकर्षित करने वाले १६९. लङ्काप्रासादभञ्जकः—लङ्का के राक्षसों के महलों का विध्वंस करने वाले ।।२१।।

कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वपावनः ।
विश्वभोक्ताथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।।२२।।

१७०. कृष्णः—कृष्णस्वरूप, १७१. कृष्णस्तुतः—कृष्ण के द्वारा

स्तुति किये गये, १७२. शान्तः—शान्तस्वरूप, १७३. शान्तिदः—शान्ति प्रदान करने वाले, १७४. विश्वपावनः—विश्व को पावन करने वाले, १७५. विश्वभोक्ता—सारे भोग्य पदार्थों के भोक्ता, १७६. मारघ्नः—कामदेव का हनन करने वाले, १७७. ब्रह्मचारी—आजन्म ब्रह्मचारी, १७८. जितेन्द्रियः—जिन्होंने इन्द्रियों कों जीत लिया है ।।२२।।

ऊर्ध्वगो लाङ्गूली माली लाङ्गूलाहतराक्षसः ।
समीरतनुजो वीर वीरतारो जयप्रदः ।।२३।।

१७९. ऊर्ध्वगः-आकाश-मार्ग से गमन करने वाले, १८०. लांगुली-बड़ी पूँछ वाले, १८१. माली—माला वाले, १८२. लाङ्गलाहतराक्षसः-पूँछ से राक्षसों को मार डालने वाले, १८३. समीरतनुजः—वायुदेवता के पुत्र, १८४. वीरः—शौर्यशाली, १८५. वीरतारः-वीर शत्रुओं को मारकर तारने वाले, १८६. जयप्रदः—जय प्रदान करने वाले ।।२३।।

जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पावनपावनः ।।२४।।

१८७. जगन्मङ्गलदः—जगत् को मङ्गल प्रदान करने वाले, १८८. पुण्यः—भगवन्नाम-संकीर्तन से विश्व को पवित्र करने वाले, १८९. पुण्यश्रवणकीर्तनः—जिनकी कथाओं का श्रवण-कीर्तन पुण्यप्रद है, १९०. पुण्यकीर्तिः—जिनका यशोगान पुण्यप्रद है, १९१. पुण्यगतिः—जिनकी उपासना पुण्य का फल है १९२. जगत्पावनपावनः—जो जगत् को पवित्र करने वालों को पावन बनाते हैं ।।२४।।

देवेशो जितमारोऽथ रामभक्तिविधायकः ।
ध्याता ध्येयो लयः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ।।२५।।

१९३. देवेशः—देवताओं के स्वामी, १९४. जितमारः—कामदेव को जीतने वाले, १९५. रामभक्तिविधायकः—श्रीराम भक्ति का विधान करने वाले, १९६. ध्याता-रात-दिन श्रीराम का ध्यान करने वाले, १९७. ध्येयः मुनियों के द्वारा ध्येय, १९८. लयः—अपने में अखिल चराचर को विलीन करने वाले, १९९. साक्षी सर्वद्रष्टा, २००. चेता—सर्वज्ञ, २०१. चैतन्यविग्रहः—चिन्मय शरीर वाले ।।२५।।

ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणः समीरणः ।
विभीषणप्रियः शूरः पिप्पलाश्रयसिद्धिदः ॥२६॥

२०२. ज्ञानदः—ब्रह्मज्ञान के दाता, २०३. प्राणदः—प्राण (बल) प्रदान करने वाले, २०४. प्राणः—जिससे प्राणी प्राण वाले हैं, अर्थात् प्राणस्वरूप, २०५. जगत्प्राणः—जगत् के प्राण, २०६. समीरणः—वायु-पुत्र, २०७. विभीषणप्रियः—विभीषण के प्यारे, २०८. शूरः—शत्रुओं को रण में सुलाने वाले, २०९. पिप्पलाश्रयसिद्धिदः—(आनन्दरामायण के मनोहरकाण्ड के अनुसार) अश्वत्थ को गृह मानकर साधना करने वाले साधक को सारी सिद्धियाँ प्रदान करने वाले ॥२६॥

सिद्धः सिद्धाश्रयः कालो महोक्षः कालजान्तकः ।
लङ्केशनिधनस्थायी लङ्कादाहक ईश्वरः ॥२७॥

२१०, सिद्धः—सिद्धस्वरूप, २११. सिद्धाश्रयः—सिद्धों के आश्रय, २१२. कालः—यमरूप, २१३. महोक्षः—महान् धर्म रूपी वैलवाले भगवान् शिव के स्वरूप, २१४. कालजान्तकः—काल से उत्पन्न जरा-व्याधि आदि दोषों का अन्त करने वाले, २१५. लङ्केशनिधनस्थायी – रावण के विनाश के लिये स्थिरचित्त, २१६. लङ्कादाहकः—लङ्का को जलाने वाले, २१७. ईश्वरः—त्रिलोकी में परम ऐश्वर्यशाली ॥२७॥

चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ।
कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥२८॥

२१८. चन्द्रसूर्याग्निनेत्रः—चन्द्र, सूर्य और अग्निरूप तीन नेत्रों वाले शिवस्वरूप, २१९. कालाग्निः—मृत्युकारी अग्निरूप, २२०. प्रलयान्तकः—प्रलय का अन्त करने वाले अर्थात् भक्तों को जन्म-मृत्यु से रहित करने वाले, २२१. कपिलः—काले पीले वर्ण के रोम से युक्त, २२२. कपिशः—श्याम-पीतवर्णमिश्रित कपिशवर्ण, २२३. पुण्यराशिः—पुण्य की राशि, २२४. द्वादषराशिगः – द्वादश राशियों के ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषशास्त्र के जानने वाले* ॥२८॥

---

*मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन—ये द्वादश राशियाँ हैं ।

सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ॥२९॥

२२५. सर्वाश्रयः—सबके आश्रय स्थान. २२६. अप्रमेयात्मा—अनुपम शरीर वाले, २२७. रेवत्यादिनिवारकः—रेवती-पूतना आदि ग्रह-दोषों का निवारण करने वाले, २२८. लक्ष्मणप्राणदाता—संजीवनी द्वारा लक्ष्मणजी को प्राण देने वाले, २२९. सीताजीवनहेतुकः - श्रीजानकी जी को श्रीराम का संदेश देकर जीवन प्रदान करने वाले ॥२९॥

रामध्येयो हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बली ।
देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ॥३०॥

२३०. रामध्येयः—श्रीराम जिनका ध्यान-स्मरण करते हैं, २३१. हृषीकेशः—इन्द्रियों के स्वामी, २३२. विष्णुभक्तः—विष्णु के भक्त, २३३. जटी—जटा वाले, २३४. बली—बलशाली, २३५. देवारिदर्पहा—देव-शत्रुओं के दर्प को नष्ट करने वाले, २३६. होता—भगवद्भक्ति का अनुष्ठान करने वाले, २३७. धाता—जगत् कों धारण करने वाले, २३८. कर्त्ता—जगत् को बनाने वाले, २३९. जगत्प्रभुः—जगत् के स्वामी ॥३०॥

नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरत्रपः ।
निरंजनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयंकरः ॥३१॥

२४०. नगरग्रामपालः—नगर और ग्रामवासियों की रक्षा करने वाले, २४१. शुद्धः-शुद्धस्वरूप, २४२. बुद्धः-ज्ञानस्वरूप, २४३. निरत्रपः-सलज्ज, २४४. निरञ्जनः—अज्ञान या माया से रहित, २४५. निर्विकल्पः-विकल्परहित, २४६. गुणातीतः-सत्त्वादि गुणों से रहित, २४७. भयंकरः-दुष्टों के लिये विकराल स्वरूप वाले ॥३१॥

हनुमांश्च दुराराध्यस्तपःसाध्यो महेश्वरः ।
जानकीधनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः ॥३२॥

२४८. हनुमान्—श्रीराम के अनुचर, २४९: दुराराध्य—अभक्तों के लिये कष्ट से आराधनीय, २५०. तपःसाध्य—तप के द्वारा साध्य, २५१. महेश्वरः—महान् ईश्वर, २५२. जानकीधनशोकोत्थतापहर्ता—जानकीधन

अर्थात् श्रीराम के शोक से उत्पन्न संताप को हरने वाले, २५३. परात्परः—जो अव्यक्त से भी परे हैं ।।३२।।

वाङ्मयः सदसद्रूपः कारणं प्रकृतेः परः ।
भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलङ्का विदाहकः ।।३३।।

२५४. वाङ्मयः—वेदशास्त्र-सरस्वतीस्वरूप, २५५. सदसद्रूपः—सत् और असत् स्वरूप, २५६. कारणम्—संसार के अभिन्न निमित्तोपादान कारण, २५७. प्रकृतेः परः—प्रकृतिसे परे हैं, २५८. भाग्यदः—कर्मजन्य शुभाशुभ फलों को देने वाले, २५९. निर्मलः—मल अर्थात् दोष से रहित, २६०. नेता—मार्गदर्शक, २६१. पुच्छलङ्काविदाहकः—पुच्छ से लङ्का को जलाने वाले ।।३३।।

पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ।
छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ।।३४।।

२६२. पुच्छबद्धयातुधानः—पुच्छ से राक्षसों को बाँधने वाले, २६३. यातुधानरिपुप्रियः—राक्षसों के शत्रु श्रीराम के प्रिय, २६४. छायापहारी—छाया नाम की राक्षसी को मारने वाले, २६५. भूतेशः—भूतों के स्वामी, २६६. लोकेशः—लोकों के स्वामी, २६७. सद्गतिप्रदः—संतों को सद्गति प्रदान करने वाले ।।३४।।

प्लवंगमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ।
सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ।।३५।।

२६८. प्लवंगमेश्वरः—वानरों के स्वामी, २६९. क्रोधः—शत्रुओं के लिये क्रोधस्वरूप, २७०. क्रोधसंरक्तलोचनः—युद्ध काल में क्रोध से लाल नेत्र वाले, २७१. सौम्यः—सौम्यस्वरूप, २७२. गुरुः—अज्ञान दूर करके परमात्मदर्शन कराने वाले, २७३, काव्यकर्त्ता काव्य-रचना करने वाले, २७४. भक्तानां वरप्रदः—भक्तों को अभीष्ट वर प्रदान करने वाले ।।३५।।

भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरंदरः ।
क्रोधहर्ता तमोहर्ता भक्ताभयवरप्रदः ।।३६।।

२७५. भक्तानुकम्पी—भक्तों पर अनुकम्पा करने वाले, २७६. विश्वेशः—विश्व के संचालक, २७७. पुरुहूतः—बहुत बार लोग

जिनको पुकारते हैं, २७८. पुरंदरः—शत्रु के नगरों को ध्वस्त करने वाले, २७९. क्रोधहर्ता—क्रोध को हरने वाले, २८०. तमोहर्ता—अज्ञानान्धकार को दूर करने वाले, २८१. भक्ताभयवरप्रदः—भक्तों को अभय वर प्रदान करने वाले ।।३६।।

अग्निर्विभावसुर्भास्वान् यमो निर्ऋतिरेव च ।
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कौबेर ईश्वरः ।।३७।।

२८२. अग्निः—अग्निस्वरूप, २८३. विभावसुः दिव्य तेजःस्वरूप, २८४. भास्वान्—प्रकाशयुक्त, २८५. यमः—संयमस्वरूप, २८६. निर्ऋतिः—नैर्ऋतगण के स्वामी, २८७. वरुणः—जल के देवता वरुणस्वरूप, २८८. वायुगतिमान्—वायु के समान गतिशील, २८९. वायुः—वायुपुत्र होने के कारण वायुस्वरूप, २९०. कौबेर ईश्वरः—कुबेर सम्बन्धी धन के मालिक ।।३७।।

रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ।
राहुः केतुर्मरुद्धोता दाता हर्ता समीरजः ।।३८।।

२९१. रविः—सूर्यस्वरूप, २९२, चन्द्रः—जगत् को आह्लादित करने वाले चन्द्रस्वरूप, २९३. कुजः—मङ्गलग्रहस्वरूप, २९४. सौम्यः—बुध ग्रहस्वरूप, २९५. गुरुः—बृहस्पतिग्रहस्वरूप, २९६. काव्यः—शुक्र ग्रहस्वरूप, २९७. शनैश्चरः—शनिग्रहस्वरूप, २९८. राहुः—राहु ग्रहस्वरूप, २९९. केतुः—केतुग्रहस्वरूप, ३००. मरुत्—वायुस्वरूप, ३०१. होता—हवन करने वाले, ३०२. दाता—भक्तों के भव बन्धन को काटने वाले, ३०३. हर्ता—भक्तों की ममता को हरने वाले, ३०४. समीरजः—पवन देवता के पुत्र ।।३८।।

मशकीकृतदेवारिदैत्यारिर्मधुसूदनः ।
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ।।३९।।

३०५. मशकीकृतदेवारिः—देवताओं के शत्रुओं को मच्छर के समान समझने वाले, ३०६. दैत्यारिः—दैत्यों के शत्रु, ३०७, मधुसूदनः—भक्तों के शुभाशुभ कर्मों का विनाश करने वाले, ३०८. कामः—श्रीराम-भक्ति की कामना करने वाले, ३०९. कपिः—जल से पृथ्वी की रक्षा करने वाले,

३१०. कामपालः— वीर्यरक्षक अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, ३११. कपिलः—कपिलमुनिस्वरूप, ३१२. विश्वजीवनः—विश्व के जीवन ।।३९।।

भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः ।
स्वाहा स्वधा हविः कव्यं हव्यवाहप्रकाशकः ।।४०।।

३१३. भागीरथीपदाम्भोजः–जिनके चरण-कमल भागीरथी के समान पवित्र करने वाले हैं, ३१४. सेतुबन्ध-विशारदः–सेतु बाँधने में चतुर, ३१५. स्वाहा–स्वाहास्वरूप, ३१६. स्वधा–स्वधास्वरूप, ३१७. हविः–हविःस्वरूप, ३१८. कव्यम्—पितरों को दिये जाने वाले अन्नादिरुप, ३१९. हव्यवाह-प्रकाशकः—देवताओं के लिये हव्य वहन करने वाले अग्नि के समान प्रकाशक ।।४०।।

स्वप्रकाशो महावीरो लघुरूर्जितविक्रमः ।
उड्डीनोड्डीनगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ।।४१।।

३२० स्वप्रकाशः—स्वयं प्रकाशस्वरुप, ३२१. महावीरः—बड़े बलवान्, ३२२, लघुः—लघु रुप धारण करने वाले, ३२३. ऊर्जितविक्रमः–सुदृढ़ पराक्रम वाले ३२४. उड्डीनोड्डीनगतिमान्—आकाश में उड़ने वालों में तीव्रगतिशाली, ३२५. सद्गतिः—सम्यक् रीति से चलने वाले, ३२६. पुरुषोत्तमः—पुरुषों में श्रेष्ठ ।।४१।।

जगदात्मा जगद्योनिर्जगदन्तो अनन्तकः ।
विपाप्मा निष्कलङ्कोऽथ महान् महदहंकृतिः ।।४२।।

३२७. जगदात्मा—जगत्-स्वरुप, ३२८. जगद्योनिः जगत् के करण, ३२९. जगदन्तः—जगत् का अन्त करने वाले, ३३०. अनन्तकः—जिनके अनन्त गुण हैं, ३३१. विपाप्मा–पापरहित, ३३२. निष्कलङ्कः–कलङ्करहित, ३३३. महान्—महत्तत्त्वस्वरुप, ३३४. महदहंकृतिः—महान् अहंकारतत्त्व-स्वरुप ।।४२।।

खं वायुः पृथ्वी चापो वह्निर्दिक्पाल एव च ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः ।।४३।।

३३५. खं---आकाशतत्त्वस्वरुप, ३३६. वायुः--वायुतत्त्वस्वरुप,

३३७. पृथ्वी-पृथ्वीतत्त्वस्वरूप, ३३८. आपः-जलतत्त्वस्वरूप, ३३९. वह्निः-अग्नितत्त्वरूप, ३४०. दिक्पालः - दिशाओं का पालन करने वाले, ३४१. क्षेत्रज्ञः—क्षेत्र के ज्ञाता, ३४२. क्षेत्रहर्ता-क्षेत्र का हरण करने वाले, ३४३. पल्वलीकृतसागरः—सागर को लघु जलाशयरूप मानकर सरलता से पार करने वाले ।।४३।।

हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरोऽमरः ।
हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो विशाम्पतिः ।।४४।।

३४४. हिरण्मयः—स्वर्ण के समान कान्ति वाले, ३४५. पुराणः—पुराणपुरुष, ३४६. खेचरः-आकाश में विचरण करने वाले, ३४७. भूचरः-पृथ्वी पर घूमने वाले, ३४८. अमरः—न मरने वाले, ३४९. हिरण्यगर्भः-विश्व को उत्पन्न करने वाले ब्रह्मास्वरूप, ३५०. सूत्रातमा –सर्वव्यापक, ३५१. विशाम्पतिः राजराजः—मनुष्यों का पालन करने वाले राजाधिराज ।।४४।।

वेदान्तवेद्य उद्गीथो वेदवेदाङ्गपारगः ।
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यःस्फूर्तिदाता गुणाकरः ।।४५।।

३५२. वेदान्तवेद्य-:वेदान्त शास्त्रद्वारा जानने योग्य, ३५३. उद्गीथः-ॐकारस्वरूप, ३५४. वेदवेदाङ्गपारगः—चारों वेदों और छहों वेदाङ्गों में पारंगत, ३५५. प्रतिग्रामस्थितिः—प्रत्येक गाँव में स्थित रहने वाले, ३५६. सद्यःस्फूर्तिदाता—तत्काल स्फूर्ति प्रदान करने वाले, ३५७. गुणाकरः—गुणों की खानि ।।४५।।

नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ।
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः ।।४६।।

३५८. नक्षत्रमाली—सत्ताईस नक्षत्रों की माला वाले,* ३५९. भूतात्मा—प्राणियों की आत्मा, ३६०. सुरभिः—कामधेनुस्वरूप, ३६१.

---

*अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्र हैं। एक-एक नक्षत्र के चार-चार चरण होते हैं और चरणों की संख्या एक सौ आठ होती है। मालाओं की मणियाँ भी एक सौ आठ होती हैं। अतः विराट्-रूप हनुमानजी की सत्ताईस नक्षत्र-रूप माला है।

कल्पपादपः—भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने वाले कल्पवृक्षस्वरूप, ३६२. चिन्तामणिः—चिन्तामणिस्वरूप, ३६३. गुणनिधिः—गुणों की खानि, ३६४. प्रजाधारः—प्रजा के आधारभूत, ३६५. अनुत्तमः—जिनसे उत्तम कोई नहीं है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ ।।४६।।

पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान् शर्वरीपतिः ।
किल्किलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ।।४७।।

३६६. पुण्यश्लोकः—पुण्य कीर्ति वाले, ३६७. पुरारातिः-पुर नामक राक्षस के शत्रु शिवस्वरूप, ३६८. ज्योतिष्मान्—ज्योतिःस्वरूप, ३६९. शर्वरीपतिः—चन्द्रस्वरूप, ३७०. किल्किलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः—किल-किलशद्व से भूत-प्रेत-पिशाचादि को संत्रस्त करने वाले ।।४७।।

ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् ।
अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ।।४८।।

३७१. ऋणत्रयहरः—भक्तों के तीनों ऋणों को हरने वाले,† ३७२. सूक्ष्मः—सूक्ष्मस्वरूप, ३७३. स्थूलः—स्थूलस्वरूप, ३७४. सर्वगतिः—सर्वत्र गति वाले, ३७५. पुमान्—पुरुषार्थी, ३७६. अपस्मारहरः—अपस्मार (मिरगीरोग) को हरने वाले, ३७७. स्मर्ता—भगवान् का स्मरण करने वाले, ३७८. श्रुतिः—वेदस्वरूप, ३७९. गाथा—स्तोत्रस्वरूप, ३८०. स्मृतिः—स्मृतिस्वरूप, ३८१. मनुः—मन्त्रस्वरूप ।।४८।।

स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं यतीश्वरः ।
नादरूपः परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ।।४९।।

३८२. स्वर्गद्वारम्—स्वर्ग के द्वारस्वरूप, ३८३. प्रजाद्वारम्—प्रजा अर्थात् संतति प्रदान करने वाले, ३८४, मोक्षद्वारम्—मोक्ष प्रदान करने वाले, ३८५. यतीश्वरः—संयम करने वालों में सर्वश्रेष्ठ, ३८६. नादरूपः—नाद-ब्रह्मस्वरूप, ३८७. परम्—मोक्षरूप, ३८८. ब्रह्म—परब्रह्मस्वरूप, ३८९. ब्रह्म—सर्वव्यापक, ३९०. ब्रह्मपुरातनः—आदिकारणरूप पुरातन ब्रह्म ।।४९।।

---

†देव-ऋण, पितृ-ऋण और ऋषि-ऋण—ये मुख्य तीन ऋण होते हैं ।

एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ।
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः ॥५०॥

३९१. एकः—अद्वितीय, ३९२. अनेकः-अनेक रुप, ३९३. जनः-भक्तस्वरुप, ३९४. शुक्लः शुक्लस्वरुप, ३९५. स्वयंज्योतिः—स्वयं प्रकाशस्वरुप, ३९६. अनाकुलः—व्याकुल न होने वाले, ३९७. ज्योतिः—प्रकाशस्वरुप, ३९८. अनादिर्ज्योतिः—सब प्रकार की ज्योति के मूलभूत अनादि ज्योति, ३९९. सात्त्विकः-सात्त्विक रुप में पालनकर्ता, ४००. राजसः—राजस रुप में उत्पन्न करने वाले, ४०१. तमः-तमोरुप में संहारकर्ता ॥५०॥

तमोहर्ता निरालम्बो निराहारो गुणाकरः ।
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः ॥५१॥

४०२. तमोहर्तातिमो-गुण का नाश करने वाले, ४०३. निरालम्बः-आश्रयरहित, ४०४. निराकार—आकाररहित, ४०५. गुणाकरः—गुणों की खानि, ४०६. गुणाश्रयः-तीनों गुणों के आश्रय, ४०७ गुणामयः-सद्गुणों से सम्पन्न, ४०८. बृहत्कर्मा-महान् कार्य करने वाले, ४०९. बृहद्यशाः-विस्तीर्ण कीर्तिवाले ॥५१॥

बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ।
बृहत्कर्णो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥५२॥

४१०. बृहद्धनुः-बड़ी ठुड्डी वाले, ४११. बृहत्पादः—लंबी टाँग वाले, ४१२. बृहन्मूर्धा—बड़े मस्तक वाले, ४१३. बृहत्स्वनः—बड़ा शद्ब करने वाले, ४१४ बृहत्कर्ण —बढ़े कान वाले, ४१५. बृहन्नासः -लंबी नासिका वाले, ४१६. बृहद्बाहुः—लंबी भुजा वाले, ४१७. बृहत्तनुः—विशाल देहधारी ॥५२॥

बृहज्जानुर्बृहत्कार्यो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ।
बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥५३॥

४१८. बृहज्जानुः—बड़े घुटनों वाले, ४१९. बृहत्कार्यः-महान् कार्य करने वाले, ४२०. बृहत्पुच्छः-लंबी पूँछ वाले, ४२१. बृहत्कर -लंबे हाथों वाले, ४२२. बृहद्गतिः—तीव्र गति वाले, ४२३. बृहत्सेव्यः—महापुरुषों के द्वारा सेव्य, ४२४. बृहल्लोकफलप्रदः—सम्पूर्ण लोकरुप फल देने वाले ॥५३॥

बृहच्छक्तिबृहद्वाम्छाफलदो बृहदीश्वरः ।
बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ।।५४।।

४२५. बृहच्छक्तिः—महान् शक्तिशाली, ४२६ बृहद्वाम्छाफलदः—बड़ी-बड़ी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले, ४२७. बृहदीश्वरः-महान् सामर्थ्य-वान्, ४२८. बृहल्लोकनुतः-असंख्य लोगों के द्वारा नमस्कृत, ४२९. द्रष्टा-शुभाशुभ कर्मों को देखने वाले, ४३०. विद्यादाता-विद्या प्रदान करने वाले, ४३१. जगद्गुरुः—जगत् को सन्मार्ग में लगाने वाले गुरु ।।५४।।

देवाचार्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ।
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ।।५५।।

४३२. देवाचार्यः—देवताओं के आचार्य, ४३३. सत्यवादी—सत्य बोलने वाले, ४३४. ब्रह्मवादी—ब्रह्म (परमात्म) विषयक विवेचन करने वाले, ४३५. कलाधरः—कलाओं के ज्ञाता, ४३६. सप्तपातालगामी—सातों पाताल में विचरण करने वाले,† ४३७. मलयाचलसंश्रयः—मलयागिरि पर निवास करने वाले ।।५५।।

उत्तरशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः ।
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणश्रुतिचञ्चुरः ।।५६।।

४३८, उत्तराशास्थितः—उत्तर दिशा में स्थित, ४३९. श्रीदः—शोभा (ऐश्वर्य) प्रदान करने वाले, ४४०. दिव्यौषधिवशः—दिव्य औषधियों को वशीभूत करने वाले, ४४१. खगः—नभोमण्डल में विचरण करने वाले, ४४२. शाखामृगः—शाखाओं पर कूदने वाले, ४४३. कपीन्द्रः—वानरों के अधिपति, ४४४. पुराणश्रुतिचञ्चुर—श्रुति और पुराण की विशेष जानकारी रखने वाले ।।५६।।

चतुरब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः ।
अनादिनिधनो व्यासो वैकुण्ठः पृथ्वीपतिः ।।५७।।

४४५. चतुरब्राह्मणः—निपुण ब्राह्मणस्वरूप, ४४६. योगी योग

---

†अतलं वितलं चैव सुतलं च तलातलम् ।
महातलं च विख्यातं ततो ज्ञेयं रसालम् ।।
ततः पातालमित्येव सप्त पातलसंज्ञकाः ।। (पद्मपु० पा० खण्ड)

सिद्ध, ४४७. योगमेय्यः–योगाभ्यास के द्वारा प्राप्त होने वाले, ४४८. परावरः– विश्व के आदि और अन्तस्वरूप, ४४९. अनादिनिधनः–आदि अन्त से रहित, ४५०. व्यासः—वेदों का विस्तार करने वाले, ४५१. वैकुण्ठः–माया के प्रभाव से रहित, ४५२. पृथिवीपतिः—भूलोक के रक्षक ॥५७॥

अपराजितो जितारातिः सदानन्दो दयायुतः ।
गोपालो गोपतिर्गोप्ता कलिकालपराशरः ॥५८॥

४५३. अपराजितः—शत्रुओं के द्वारा अजेय, ४५४. जितारातिः–शत्रुओं को जीतने वाले, ४५५. सदानन्दः—सदा आनन्दित रहने वाले, ४५६. दयायुतः–दयालु, ४५७. गोपालः– पृथ्वी का पालन करने वाले, ४५८. गोपतिः–इन्द्रियों के स्वामी, ४५९. गोप्ताः—भक्तों के रक्षक, ४६०. कलिकालपराशरः–कलिकाल के पराशर अर्थात् कथावाचकों के उत्पादक ॥५८॥

मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः ।
तत्त्वदाताथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ॥५९॥

४६१. मनोवेगी – मन के समान वेग वाले, ४६२. सदायोगी–सदा योगयुक्त रहने वाले, ४६३. संसारभयनाशनः- भवभय का नाश करने वाले, ४६४. तत्त्वदाता–तत्त्वज्ञान के दाता, ४६५. तत्त्वज्ञः–तत्त्वज्ञानी, ४६६. तत्त्वम्–ब्रह्मस्वरूप, ४६७. तत्त्वप्रकाशकः–तत्त्व का प्रकाश करने वाले ॥५९॥

शुद्धो बुद्धो नित्यमुक्तो भक्तराजो जयद्रथः ।
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥६०॥

४६८. शुद्धः —सबको पवित्र करने वाले, ४६९. बुद्धः—ज्ञानवान्, ४७०. नित्यमुक्तः–सदा मुक्तस्वरूप, ४७१. भक्तराजः—भगवद्भक्तों में देदीप्यमान, ४७२. जयद्रथः – आक्रमण में जय प्राप्त करने वाले, ४७३. प्रलयः–शत्रुओं के लिये प्रलयकर, ४७४. अमितमायः-अनन्त माया जानने वाले, ४७५. मायातीतः सर्वथा मायाजाल से रहित, ४७६. विमत्सरः—ईर्ष्या से रहित ॥६०॥

मायाभर्जिरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ।

मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम् ।।६१।।

४७७. मायाभर्जितरक्षः—अपनी माया से राक्षसों को भून डालने वाले, ४७८. मायानिर्मितविष्टपः—माया से भुवनों की सृष्टि करने वाले, ४७९. मायाश्रयः—माया का का आश्रय लेने वाले, ४८०. निर्लेपः निरासक्त रहने वाले, ४८१. मायानिर्वर्तकः—मायाशक्ति द्वारा कार्य सम्पन्न करने वाले, ४८२. सुखम्—सुखस्वरूप ।।६१।।

सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ।

महेश्वरः सत्यसंधः शरभः कलिपावनः ।।६२।।

४८३. सुखी—सदा सुख से रहने वाले, ४८४. सुखप्रदः—सुख प्रदान करने वाले, ४८५. नागः नागस्वरूप, ४८६. महेशकृतसंस्तवः—शंकरजी के द्वारा स्तुत, ४८७. महेश्वरः—महान् ऐश्वर्यशाली, ४८८. सत्यसंधः—सत्यवादी, ४८९. शरभः—शरभ नामक पशु के समान महान् बलशाली, ४९०. कलिपावनः—कलियुग को पवित्र करने वाले ।।६२।।

सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणः ।

सहस्रबाहुः सहजो द्विबाहुर्द्विभुजोऽमरः ।।६३।।

४९१. सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणः—हजारों सिर वाले रावण के बल को विध्वंस करने में चतुर, ४९२. सहस्रबाहुः—हजारों भुजा वाले, ४९३. सहजः—सहज स्थितिस्वरूप, ४९४. द्विबाहुः—दो बाहु वाले, ४९५. द्विभुजः—दो भुजाओं वाले, ४९६. अमरः—अविनाशी ।।६३।।

चतुर्भुजो दशभुजो हयग्रीवः खगाननः ।

कपिवक्त्रः कपिपतिर्नरसिंहो महाद्युतिः ।।६४।।

४९७. चतुर्भुजः—चार भुजाओं वाले, ४९८. दशभुजः—दश भुजा वाले, ४९९. हयग्रीवः—अश्व के समान गर्दन वाले, ५००. खगाननः—गरुड के समान मुख वाले, ५०१. कपिवक्त्रः—कपि-सदृश मुख वाले, ५०२. कपिपतिः—वानरों की रक्षा करने वाले, ५०३. नरसिंहः—नरसिंह के समान विकराल रूप धारण करने वाले, ५०४. महाद्युतिः—अत्यन्त तेजस्वी ।।६४।।

भीषणो भावगो वन्द्यो वराहो वायुरूपधृक् ।
लक्ष्मणप्राणदाता च पराजितदशाननः ॥६५॥

५०५. भीषणः—युद्ध में भयंकररूप, ५०६. भावगः—भगवद्भाव को प्राप्त, ५०७. वन्द्यः—वन्दना करने योग्य, ५०८. वराहः—वराह-मुख वाले, ५०९. वायुरूपधृक्—वायु का रूप धारण करने वाले, ५१०. लक्ष्मणप्राणदाता-लक्ष्मण को (संजीवनी लाकर) जिलाने वाले, ५११. पराजितदशाननः—दशानन (रावण) को पराजित करने वाले ॥६५॥

पारिजातनिवासी च वटुर्वचनकोविदः ।
सुरसास्यविनिर्मुक्तः सिंहिकाप्राणहारकः ॥६६॥

५१२. पारिजातनिवासी-पारिजात वृक्ष के नीचे निवास करने वाले, ५१३. वटुः—ब्रह्मचारीस्वरूप, ५१४. वचनकोविदः-बोलने में अति चतुर, ५१५. सुरसास्यविनिर्मुक्तः-सुरसा के मुख से सुखपूर्वक निकल आने वाले, ५१६. सिंहिकाप्राणहारकः-सिंहिका राक्षसी का प्राण हरने वाले, ॥६६॥

लङ्कालंकारविध्वंसी वृषदंशकरूपधृक् ।
रात्रिसंचारकुशलो रात्रिंचरगृहाग्निदः ॥६७॥

५१७. लङ्कालंकारविध्वंसी—लंका की शोभा को नष्ट करने वाले, ५१८. वृषदंशकरूपधृक्-वृषदंशक अर्थात् बिडालका रूप धारण करने वाले, ५१९. रात्रिसंचारकुशलः-रात में घूमने में चतुर, ५२०. रात्रिंचर-गृहाग्निदः-राक्षसों के घर में आग लगाने वाले ॥६७॥

किंकरान्तकरो जम्बुमालिहन्तोग्ररूपधृक् ।
आकाशचारी हरिगो मेघनादरणोत्सुकः ॥६८॥

५२१. किंकरान्तकरः-रावण के सेवकों को मारने वाले, ५२२. जम्बुमालिहन्ता-जम्बुमाली राक्षस को मारने वाले, ५२३. उग्ररूपधृक्—उग्र रूप धारण करने वाले, ५२४. आकाशचारी—आकाश में विचरण करने वाले, ५२५. हरिगः-प्रभु को प्राप्त करने वाले, ५२६. मेघनादरणोत्सुकः--मेघनाद के साथ युद्ध करने के लिये उत्कण्ठित ॥६८॥

मेघगम्भीरनिनदो महारावणकुलान्तकः ।
कालनेमिप्राणहारी मकरीशापमोक्षदः ।।६९।।

५२७. मेघगम्भीरनिनदः—बादल के समान गम्भीर शब्द करने वाले, ५२८. महारावलकुलान्तकः—महारावण के कुल को नष्ट करने वाले, ५२९. कालनेमिप्राणहारी—कालनेमि राक्षस का प्राण हरने वाले, ५३०. मकरीशापमोक्षदः—मकरी को शाप से मुक्त करने वाले ।।६९।।

रसो रसज्ञः सम्मानो रूप चक्षुः श्रुतिर्वचः ।
घ्राणो गन्धः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहंकारमानगः ।।७०।।

५३१. रसः—रसस्वरूप, ५३२. रसज्ञः—रस को जानने वाले, ५३३. सम्मानः—प्रभु का सम्यक् सम्मान करने वाले, ५३४. रूपम्—रूप-स्वरूप, ५३५. चक्षुः—चक्षुस्वरूप, ५३६. श्रुतिः—श्रवणस्वरूप, ५३७. वचः—वाणीस्वरूप, ५३८, घ्राणः—नासिकास्वरूप, ५३९. गन्धः—गन्ध-स्वरूप, ५४०. स्पर्शनम्—स्पर्शरूप, ५४१. स्पर्शः—सम्पर्क-ज्ञानस्वरूप, ५४२. अहंकारमानगः—अहंकार के स्वरूप को प्राप्त होने वाले ।।७०।।

नेतिनेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ।
गिरीशो गिरिजाकान्तो दुर्वासा कविरङ्गिराः ।।७१।।

५४३. नेतिनेतीतिगम्यः—नेति-नेति शब्दों द्वारा गम्य, ५४४. वैकुण्ठ-भजनप्रियः—भगवान् के भजन में प्रीति रखने वाले, ५४५. गिरीशः—पर्वतों के ईश, ५४६. गिरिजाकान्तः—माता पार्वती के प्रिय शंकरस्वरूप, ५४७. दुर्वासाः—दुर्वासा मुनिस्वरूप, ५४८. कविः—कविस्वरूप, ५४९. अङ्गिराः—अङ्गिरा-मुनिस्वरूप ।।७१।।

भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बरोऽमलः ।
विश्वक्षेत्रो विश्वबीजो विश्वनेत्रश्च विश्वपः ।।७२।।

५५०. भृगुः—भृगुमुनिस्वरूप, ५५१. वसिष्ठः—वसिष्ठमुनिस्वरूप, ५५२. च्यवनः—च्यवन ऋषिस्वरूप, ५५३. नारदः—नारदमुनिस्वरूप, ५५४. तुम्बरः—तुम्बुरु गन्धर्वस्वरूप, ५५५. अमलः—दोषरहित, ५५६. विश्वक्षेत्रः—विश्वक्षेत्रस्वरूप, ५५७. विश्वबीजः—विश्वबीज अर्थात् कारण-

स्वरूप, ५५८. विश्वनेत्रः—सर्वद्रष्टा, ५५९. विश्वपः—विश्व के पालक ।।७२।।

याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ।
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तन्द्रा मन्त्रो मन्त्रयिता सुरः ।।७३।।

५६०. याजकः—यज्ञकर्मा, ५६१. यजमानः—प्रधान होतारुप, ५६२. पावकः—अग्निरुप, ५६३. पितरः—जगत् के माता-पिता, ५६४. श्रद्धाः—श्रद्धास्वरुप, ५६५. बुद्धिः—बुद्धिस्वरुप, ५६६. क्षमा—क्षमास्वरुप, ५६७. तन्द्रा—तन्द्रारुप, ५६८. मन्त्रः- मन्त्रस्वरुप, ५६९. मन्त्रयिता—शुभ मन्त्र देने वाले, ५७०. सुरः—देवस्वरुप ।।७३।।

राजेन्द्रो भूपती रुण्डमाली संसारसारथिः ।
नित्यसम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ।।७४।।

५७१. राजेन्द्रः—राजाओं में श्रेष्ठ, ५७२. भूपतिः—पृथ्वी के पालक, ५७३. रुण्डमाली—रुण्डों की माला वाले, ५७४. संसारसारथिः—भक्तों को भवसिन्धु पार करने में सहायक, ५७५. नित्यसम्पूर्णकामः—सदा सभी कामनाओं से तृप्त, ५७६. भक्तकामधुक्—भक्तों की कामनाओं के दोग्धा, ५७७. उत्तमः—श्रेष्ठ ।।७४।।

गणपः केशवो भ्राता पिता माता च मारुतिः ।
सहस्त्रमूर्द्धानेकास्यः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।।७५।।

५७८. गणपः—वानरगणों के पालक, ५७९. केशवः-घुँघराले केश वाले, ५८०. भ्राता—भ्रातृस्वरुप, ५८१. पिता—पितारुप, ५८२. माता—वात्सल्यमयी मातारुप, ५८३. मारुतिः पवन देवता के पुत्र, ५८४. सहस्त्र-मूर्द्धा—हजारों सिर वाले, ५८५. अनेकास्यः—अनेक मुख वाले, ५८६. सहस्त्राक्षः—सहस्त्रों नेत्र वाले, ५८७. सहस्त्रपात्—सहस्त्रों पैर वाले ।।७५।।

कामजित् कामदाहनः कामः कामफलप्रदः ।
मुद्रापहारी रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ।।७६।।

५८८. कामजित्—कामदेव को जीतने वाले, ५८९. कामदहनः—काम को जलाने वाले, ५९०. कामः-सौन्दर्यशाली, ५९१. कामफलप्रदः—

कामनाओं को पूर्ण करने वाले, ५९२. मुद्रापहारी—श्रीराम-मुद्रिका को ले जाने वाले, ५९३. रक्षोघ्नः—राक्षसों का नाश करने वाले, ५९४. क्षितिभारहरः—पृथ्वी का भार उतारने वाले, ५९५. बलः—शत्रु-संहारक ।।७६।।

नखदंष्ट्रायुधो विष्णुर्भक्ताभयवरप्रदः ।
दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ।।७७।।

५९६. नखदंष्ट्रायुधः—नख और दष्ट्रारुप शस्त्र धारण करने वाले, ५९७. विष्णुः—व्यापकस्वरुप, ५९८. भक्ताभयवरप्रदः—भक्तों को अभय वर प्रदान करने वाले, ५९९. दर्पहा—दर्प का नाश करने वाले, ६००. दर्पदः—उत्साह प्रदान करने वाले, ६०१. दंष्ट्राशतमूर्तिः—सौ दंष्ट्राओं से युक्त मूर्ति वाले, ६०२. अमूर्तिमान्—मूर्तिरहित अर्थात् निराकारस्वरुप ।।७७।।

महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ।
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ।।७८।।

६०३. महानिधिः—सद्गुणों के महान् भण्डार, ६०४. महाभागः—बड़े भाग्यशाली, ६०५. महाभर्गः—महातेजस्वी, ६०६. महर्द्धिदः—महान् ऋद्धि प्रदान करने वाले, ६०७. महाकारः—बड़े आकार वाले, ६०८. महायोगी—महान् योगी, ६०९. महातेजाः—बड़े तेजस्वी, ६१०. महाद्युतिः अत्यन्त शोभा वाले ।।७८।।

महासनो महानादो महामन्त्रो महामतिः ।
महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ।।७९।।

६११. महासनः—अत्यन्त स्थिर आसन वाले, ६१२. महानादः—बड़ी गर्जना करने वाले, ६१३. महामन्त्रः—उच्चकोटि के मन्त्र वाले, ६१४. महामतिः—महान् बुद्धिमान्, ६१५. महागमः—महान् गति वाले, ६१६. महोदारः—बड़े उदार, ६१७. महादेवात्मकः—महादेवस्वरुप, ६१८. विभुः—सर्वव्यापक ।।७९।।

रौद्रकर्मा क्रूरकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ।
अम्भोधिलङ्घनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः ।।८०।।

६१९. रौद्रकर्मा—भयानक कार्य करने वाले, ६२०. क्रूरकर्मा—

कठोर कर्म करने वाले, ६२१. रत्ननाभः—रत्न के समान नाभि वाले, ६२२. कृतागमः—शास्त्र की रचना करने वाले, ६२३. अम्भोधिलङ्घनः—समुद्र लाँघने वाले, ६२४. सिंहः—सिंहस्वरुप, ६२५. सत्यधर्मप्रमोदनः—सत्य धर्म का पालन करने में प्रसन्न ॥८०॥

जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुनन्दनः ।
जीवदाता सहस्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ॥८१॥

६२६. जितामित्रः-शत्रुओं को जीतने वाला, ६२७. जयः—जय स्वरुप, ६२८. सोमः—सोमस्वरुप, ६२९. विजयः-पराक्रमी, ६३०. वायुनन्दनः—पवन देवता को आनन्दित करने वाले, ६३१. जीवदाता—प्राण दान करने वाले, ६३२. सहस्रांशुः-सूर्यस्वरुप, ६३३. मुकुन्दः-मुक्ति प्रदान करने वाले, ६३४. भूरिदक्षिणः-विपुल दक्षिणा प्रदान करने वाले ॥८१॥

सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धिहेतुकः ।
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवन्दितः ॥८२॥

६३५. सिद्धार्थः-सदा सिद्ध प्रयोग वाले, ६३६. सिद्धिदः-सिद्धि देने वाले, ६३७. सिद्धसंकल्पः-सिद्ध संकल्प वाले, ६३८. सिद्धिहेतुकः-सिद्धियों के कारण, ६३९. सप्तपातालचरणः-सप्त पाताल में संचरण करने वाले, ६४०. सप्तर्षिगणवन्दितः—सप्तर्षियों द्वारा वन्दित† ॥८२॥

सप्ताब्धिलङ्घनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ॥८३॥

६४१. सप्ताब्धिलङ्घनः-सातों समुद्रों को लाँघने वाले[1], ६४२. वीरः-सदेश पहुँचाने वालों में वीर, ६४३. सप्तद्वीपोरुमण्डलः-सप्तद्वीप के विशाल मण्डल में विचरण करने वाले,[2] ६४४. सप्ताङ्गराज्यसुखदः-

---

† मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अङ्गिरा और वसिष्ठ- ये सात ऋषि हैं ।

१. क्षारोद, इक्षुरसोद, सुरोद, घृतोद, क्षीरोद, दधिमण्डोद और शुध्दोद- ये सात समुद्र हैं ।

२. जम्बू, प्लक्ष, शालमलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर-ये सात द्वीप हैं ।

सप्ताङ्गयुक्त राज्य के लिये सुखद,[३] ६४५. सप्तमातृनिषेवितः—सात माताओं द्वारा सेवित[४] ।।८३।।

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोता स्वराश्रयः ।
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ।।८४।।

६४६. सप्तस्वर्लोकमुकुटः–सात स्वर्गलोकों के मुकुटमणि[५], ६४७. सप्तहोता–सामवेद के सात मन्त्रों से हवन करने वाले, ६४८. स्वराश्रयः–स्वरों का आश्रय लेने वाले अर्थात् संगीतशास्त्र में प्रवीण, ६४९. सप्तच्छन्दोनिधिः–सात वैदिक छन्दों के आश्रय, ६५०. सप्तच्छन्दः—सात छन्द-स्वरुप,[६] ६५१. सप्तजनाश्रयः–सप्तजनों के आश्रयस्वरुप ।।८४।।

सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ।
मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ।।८५।।

६५२. सप्तसामोपगीतः—जिनका सामवेद की सात स्वरों द्वारा गान किया जाता है[७], ६५३. सप्तपातालसंश्रयः- सप्तपाताल के आश्रय, ६५४. मेधादः—मेधा को प्रदान करने वाले, ६५५. कीर्तिदः—यश देने वाले, ६५६.शोकहारी—शोक हरण करने वाले, ६५७. दौर्भाग्यनाशनः–दुर्भाग्य का नाश करने वाले ।।८५।।

सर्वरक्षाकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो हृष्टचित्तप्रसादनः ।।८६।।

६५८. सर्वरक्षाकरः—चारों ओर से रक्षा करने वाले, ६५९. गर्भ-

---

३. राजा, मन्त्री, सामन्त, देश, कोष, गढ़ और सेना–ये राज्य के सात अंग हैं ।

४. ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा-ये सात मातायें हैं ।

५. भूलोक, भुवलोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक—ये सात स्वर्लोक होते हैं ।

६. गायत्री, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप्, बृहति, पङ्क्ति आदि सात छन्द हैं ।

७. निषाद, आर्षभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चम—ये सात स्वर हैं ।

दोषहा—गर्भ-दोष को दूर करने वाले, ६६०. पुत्रपौत्रदः—पुत्र और पौत्र प्रदान करने वाले, ६६१. प्रतिवादिमुखस्तम्भः—प्रतिवादी के मुख को बंद करने वाले अर्थात् श्रेष्ठ वक्ता, ६६२. रुष्टचित्तप्रसादनः—रुष्टचित्त वालों को प्रसन्न करने वाले ।।८६।।

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ।
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ।।८७।।

६६३. पराभिचारशमनः-शत्रु के मारण-मोहन आदि अभिचारों को शमन करने वाले, ६६४. दुःखहा—दुःखों का नाश करने वाले, ६६५. बन्धमोक्षदः—बन्धन से मुक्त करने वाले, ६६६. नवद्वारपुराधारः—नवद्वार-पुर (शरीर) के आधार*, ६६७. नवद्वारनिकेतनः—नवद्वार वाले शरीररूपी घर में रहने वाले आत्मस्वरूप ।।८७।।

नरनारायणस्तुत्यो नवनाथमहेश्वरः ।
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ।।८८।।

६६८. नरनारायणस्तुत्यः-नर और नारायण के द्वारा स्तुत्य, ६६९. नवनाथमहेश्वरः—नवनाथों के महेश्वर, ६७०. मेखली—मेखला धारण करने वाले, ६७१. कवची—कवच धारण करने वाले, ६७२. खड्गी—खड्ग धारण करने वाले, ६७३. भ्राजिष्णुः-देदीप्यमान, ६७४. जिष्णु-सारथिः—अर्जुन के सारथि अर्थात् ध्वजा में निवास करने वाले ।।८८।।

बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।
दुष्टग्रहनिहन्ता च पिशाचग्रहघातकः ।।८९।।

६७५. बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः– अनेक योजन लंबी पूँछ वाले, ६७६. पुच्छहतासुरः—पूँछ से राक्षसों को मारने वाले, ६७७. दुष्टग्रह-निहन्ता–दुष्ट ग्रहों के नाशक, ६७८. पिशाचग्रहघातकः—पिशाचग्रह के हन्ता ।।८९।।

---

* दो नेत्र, दो कर्ण, दो नासिका-छिद्र, मुख, उपस्थ और गुदा—ये नौ द्वार हैं।

बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ।
उग्रकृत्यश्चोग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥९०॥

६७९. बालग्रहविनाशी--बाल ग्रहों का विनाश करने वाले, ६८०. धर्मनेता-धर्म के नेता, ६८१. कृपाकरः-कृपा करने वाले, ६८२. उग्रकृत्यः-उग्रकृत्यकर्ता, ६८३. उग्रवेगः-भयंकर वेगवान् ६८४. उग्रनेत्रः—उग्र नेत्र वाले, ६८५. शतक्रतुः—सौ यज्ञ करने वाले इन्द्रस्वरूप ॥९०॥

शतमन्युनुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशकः ॥९१॥

६८६. शतमन्युनुतः—इन्द्र द्वारा स्तुत, ६८७. स्तुत्यः–स्तुति करने योग्य, ६८८. स्तुतिः—स्तुतिस्वरूप, ६८९. स्तोता–स्तुति करने वाले, ६९०. महाबलः—अत्यन्त बलशाली, ६९१. समग्रगुणशाली—सारे गुणों से युक्त, ६९२. व्यग्रः-सदा उद्यत, ६९३. रक्षोविनाशक—असुरों का विनाश करने वाले ॥९१॥

रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥९२॥

६९४. रक्षोग्निदाहः—राक्षसों को अग्नि में जला देने वाले, ६९५. ब्रह्मेशः—ब्रह्मा के ऊपर शासन करने वाले, ६९६. श्रीधरः—ऐश्वर्य धारण करने वाले, ६९७. भक्तवत्सलः–भक्तों पर कृपा करने वाले, ६९८. मेघनाद.-मेघ के समान गर्जने वाले, ६९९. मेघरूपः-मेघ के समान रूप वाले, ७००. मेघवृष्टिनिवारकः–मेघ की वृष्टि को रोकने वाले ॥९२॥

मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ।
समीरतनयो योद्धा नृत्यविद्याविशारदः ॥९३॥

७०१. मेघजीवनहेतुः–मेघों के जीवन हेतु समुद्रस्वरूप, ७०२. मेघश्यामः मेघ के समान श्याम वर्ण वाले, ७०३. परात्मकः–परमात्मस्वरूप, ७०४. समीरतनयः–वायुदेवता के पुत्र, ७०५. योद्धा-शत्रुओं के साथ लड़ने वाले, ७०६. नृत्यविद्याविशारदः—नृत्यकला में निपुण ॥९३॥

अमोघोऽमोघदृष्टिश्च हीष्टदोऽरिष्टनाशनः ।
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥९४॥

७०७. अमोघः-कभी व्यर्थ न होने वाले, ७०८. अमोघदृष्टिः—जिनकी कृपादृष्टि कभी व्यर्थ नहीं जाती, ७०९. इष्टदः-मनोवांछित वस्तु देने वाले, ७१०. अरिष्टनाशनः—विघ्ननाशक, ७११. अर्थः—अर्थस्वरूप, ७१२. अनर्थापहारी--अनर्थ को दूर करने वाले, ७१३. समर्थः-सर्वथा सामर्थ्यवान्, ७१४. रामसेवकः-श्रीराम के सेवक ॥९४॥

अर्थिवन्द्योऽसुराराातिः पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ।
संकर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥९५॥

७१५. अर्थिवन्द्यः-अर्थियों के द्वारा वन्दनीय, ७१६. असुराराातिः-असुरों के शत्रु, ७१७. पुण्डरीकाक्षः—श्वेत कमल के समान नेत्र वाले, अथवा विष्णुस्वरूप, ७१८. आत्मभूः-स्वेच्छा से प्रकट होने वाले, ७१९. संकर्षणः—शत्रुओं को कर्षण करने वाले बलदेवस्वरूप, ७२०. विशुद्धात्मा-परम पवित्रस्वरूप, ७२१. विद्याराशिः-विद्या की राशि—पूर्ण विद्वान्, ७२२. सुरेश्वरः—देवताओं के स्वामी ॥९५॥

अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद् रामसारथिः ।
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निराश्रयः ॥९६॥

७२३. अचलोद्धारकः-अचलों (पर्वतों) का उद्धार करने वाले, ७२४. नित्यः—नित्य विद्यमान, ७२५. सेतुकृत्—सेतु बनाने वाले, ७२६. रामसारथिः-श्रीराम के वाहन, ७२७. आनन्दः-आनन्द प्रदान करने वाले, ७२८. परमानन्दः परमानन्दस्वरूप, ७२९. मत्स्यः-मत्स्यस्वरूप, ७३०. कूर्मः-कूर्मस्वरूप, ७३१. निराश्रयः—आश्रयरहित ॥९६॥

वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ।
रामः कृष्णः शिवो बुद्धः कल्की रामाश्रयो हरिः ॥९७॥

७३२. वाराहः-वराहस्वरूप, ७३३. नारसिंह—नृसिंहस्वरूप, ७३४. वामनः-वामनस्वरूप, ७३५. जमदग्निजः-परशुरामस्वरूप, ७३६. रामः-श्रीरामस्वरूप, ७३७. कृष्णः—श्रीकृष्णस्वरूप, ७३८. शिवः-शिवस्वरूप,

७३९. बुद्धः-बुद्धस्वरूप, ७४०. कल्किः-कल्किस्वरूप, ७४१. रामाश्रयः – श्रीराम के आश्रित, ७४२. हरिः – जगत् का दुःख हरने वाले ॥९७॥

नन्दी भृङ्गी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ।
कर्माध्यक्षः सुराध्यक्षः विश्रामो जगतीपतिः ॥९८॥

७४३. नन्दी –नन्दीस्वरूप, ७४४. भृङ्गी – भृङ्गीस्वरूप, ७४५. चण्डी—देवीस्वरूप, ७४६. गणेशः—गणपतिरूप, ७४७. गणसेवितः – वानरगणों द्वारा सेवित, ७४८. कर्माध्यक्षः—कर्मों के स्वामी, ७४९. सुराध्यक्षः—देवताओं के स्वामी, ७५०. विश्रामः—सब प्राणियों के विश्रामस्थल, ७५१. जगतीपतिः—पृथ्वी का पालन करने वाले ॥९८॥

जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ।
सुग्रीवादिस्तुतो दान्तः सर्वकर्मा प्लावंगमः ॥९९॥

७५२. जगन्नाथः—जगत् के स्वामी, ७५३. कपीशः –वानरों के स्वामी, ७५४. सर्वावासः—सबके निवास स्थान, ७५५. सदाश्रयः–परमार्थ पथ पर चलने वालों के आश्रय, ७५६. सुग्रीवादिस्तुतः–सुग्रीव आदि वानर जिनकी स्तुति करते हैं, ७५७. दान्तः–इन्द्रियों को वश में रखने वाले, ७५८. सर्वकर्मा—कृतकृत्य, ७५९. प्लवङ्गमः – वानररुप ॥९९॥

नखदारितरक्षाश्च नखयुध्दविशारदः ।
कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥१००॥

७६०. नखदारितरक्षाः – नखों के द्वारा राक्षसों को विदीर्ण करने वाले, ७६१. नखयुद्धविशारदः—नखयुद्ध में कुशल, ७६२. कुशल-–परम निपुण, ७६३. सुधनः –भक्तिरुपी सुन्दर धन वाले, ७६४. शेषः—शेषनाग स्वरुप, ७६५. वासुकिः—वासुकि सर्पस्वरुप, ७६६. तक्षकः – तक्षक सर्प स्वरुप ॥१००॥

स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरुजेताघनाशनः ।
कैवल्यरूपः कैवल्यो गरुडः पन्नगोरगः ॥१०१॥

७६७. स्वर्णवर्णः - सोने के समान दीप्तवर्ण वाले, ७६८. बलाढ्यः— अति शक्तिशाली, ७६९. पुरुजेता –बहुल विजयी, ७७०. अघनाशनः—

पाप का नाश करने वाले, ७७१. कैवल्यरुप:–मुक्तिस्वरुप, ७७२. कैवल्य:–अद्वयस्वरुप, ७७३. गरुड:—गरुडस्वरुप, ७७४. पन्नगोरग:–लेटे-लेटे चलने वाले तथा उरसे चलने वाले अर्थात् हनुमानजी सब प्रकार से चलने वाले ॥१०१॥

किल्‌किल्‌रावहतारातिर्गर्वपर्वतभेदनः ।
वज्रांगो वज्रदंष्ट्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥१०२॥

७७५. किल्‌कल्‌रावहताराति: – किल-किल शब्द से शत्रुओं का नाश करने वाले, ७७६. गर्वपर्वतभेदन:—गर्बरूप पर्वत को काट गिराने वाले, ७७७. वज्राङ्ग—वज्र शरीर, ७७८. वज्रदंष्ट्र:-वज्र के समान दाँत वाले, ७७९. भक्तवज्रनिवारक: – भक्तों के ऊपर गिरते हुए वज्र को रोकने वाले ॥१०२॥

नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ।
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ॥१०३॥

७८०. नखायुध: – नख जिनके शस्त्र हैं, ७८१. मणिग्रीव: -कण्ठ में मणि धारण करने वाले, ७८२. ज्वालामाली – लंकादाह के समय अग्नि-ज्वाला की माला धारण करने वाले, ७८३. भास्कर: –सूर्य के समान प्रकाशस्वरूप, ७८४. प्रौढ़प्रताप –प्रवृद्ध प्रताप वाले, ७८५. तपन.—सूर्यरूप, ७८६. भक्ततापनिवारक: – भक्तों का ताप संताप दूर करने वाले ॥१०३॥

शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टो ह्यचञ्चलः ।
स्वस्तिमान् स्वस्तिदो दुःखशातनः पवनात्मजः ॥१०४॥

७८७. शरणम् –शरणागत-रक्षक, ७८८. जीवनम् – सबके जीवन स्वरूप, ७८९. भोक्ता –सबको पालन करने वाले, ७९०. नानाचेष्ट:—अनेक चेष्टा वाले, ७९१. अचञ्चल:—स्वरूप में अटल रहने वाले, ७९२. स्वस्तिमान्–कल्याणस्वरूप, ७९३. स्वस्तिद:-कल्याण वितरण करने वाले, ७९४. दु:खशातन: – दु:खों के नाशक, ७९५. पवनात्मज:—पवन के पुत्र ॥१०४॥

पावनः पवनः कान्तो भक्तागःसहनो बली ।
मेघनादरिपुर्मेघनादसंहतराक्षसः ॥१०५॥

७९६. पावन:—पवित्र करने वाले, ७९७. पवन:—वायुरूप, ७९८.

कान्तः—कान्तिमान्, ७९९. भक्तागःसहनः—भक्तों के अपराधों को सहन करने वाले, ८००. बली—बलवान्, ८०१. मेघनादरिपुः—मेघनाथ के शत्रु, ८०२. मेघनादसंहतराक्षसः-जिनकी मेघःतुल्य गर्जना से राक्षस नष्ट हो जाते हैं ।।१०५।।

क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सतां गतिः ।

श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च सहायः सहनायकः ।।१०६।।

८०३. क्षरः—प्रकृतिकार्यस्वरूप, ८०४. अक्षरः—अविनासी आत्म-स्वरूप, ८०५. विनीतातमा-विनम्र-स्वभाव, ८०६. वानरेशः वानरों के ईश, ८०७. सतां गतिः-संतों की गति, ८०८. श्रीकण्ठः—शोभायमान कण्ठ वाले, ८०९. शितिकण्ठः-नीलकण्ठ भगवान् शकरस्वरूप, ८१०. सहायः—सहायता करने वाले, ८११. सहनायकः—अपने स्वामी श्रीराम के साथ रहने वाले ।।१०६।।

अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ।

अध्यात्मविद्यासारश्च ह्यध्यात्मकुशलः सुधीः ।।१०७।।

८१२. अस्थूलः—सूक्ष्मस्वरुप, ८१३. अनणुः—महान्, ८१४. भर्गः—आभायुक्त, ८१५. दिव्यः-दिव्यरुपधारी, ८१६. संसृतिनाशनः—भवबन्धन को मिटाने वाले, ८१७. अध्यातमविद्यासार-—अध्यातम विद्या के सार-तत्त्व, ८१८. अध्यात्कुशलः—अध्यातम विद्या में कुशल, ८१९. सुधीः—सुन्दर बुद्धि वाले ।।१०७।।

अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ।

सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ।।१०८।।

८२०. अकलमषः-निष्पाप, ८२१. सत्यहेतुः—सत्यस्वरुप परमात्मा की प्राप्ति कराने वाले, ८२२. सत्यदः—सत्य प्रदान करने वाले, ८२३. सत्य-गोचरः—सत्य से दृष्टिगोचर होने वाले, ८२४. सत्यगर्भः—सत्य आशय वाले, ८२५. सत्यरुपः—सत्य (प्रशस्त) रुप-सौन्दर्य से युक्त, ८२६. सत्यः—सत्य-स्वरुप, ८२७. सत्यपराक्रमः—जिनका पराक्रम निष्फल नहीं होता ।।१०८।।

अंजनाप्राणलिङ्गश्च वायुवंशोद्भवः शुभः ।

भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ।।१०९।।

८२८. अञ्जनाप्राणलिङ्गः-माता अञ्जना के प्राणप्यारे पुत्र, ८२९.

वायुमंशोद्भवः-वायु देवता के वंश में उत्पन्न, ८३०. शुभः-कल्याणप्रद, ८३१. भद्ररुपः-मङ्गलमय, ८३२. रुद्ररुपः-शंकरस्वरुप, ८३३. सुरुपः—सुन्दर स्वरुप वाले, ८३४. चित्ररुपधृक्-चित्र-विचित्र रुप धारण करने वाले ॥१०९॥

मैनाकवन्दितः सूक्ष्मदर्शनो विजयो जयः ।

क्रान्तदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ॥११०॥

८३५. मैनाकवन्दितः—मैनाक पर्वत द्वारा वन्दित, ८३६. सूक्ष्मदर्शनः-सूक्ष्म दृष्टि वाले, ८३७. विजयः—अर्जुनस्वरुप, ८३८. जयः-विष्णु के द्वारपालस्वरुप, ८३९. क्रान्तदिङ्मण्डलः--दिशाओं के पार जाने वाले, ८४०. रुद्रः-आर्द्रानक्षत्ररुप, ८४१. प्रकटीकृतविक्रमः-अपने पराक्रम को प्रकट करने वाले ॥११०

कम्बुकुण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृकोदरः ।

लम्बौष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदां वरः ॥१११॥

८४२. कम्बुकण्ठः—शङ्ख के समान सुन्दर गर्दन वाले, ८४३. प्रसन्नात्मा—सदा प्रसन्नचित्त रहने वाले, ८४४. ह्रस्वनासः—छोटी नासिका वाले, ८४५. वृकोदरः—भेड़िया के समान बड़े उदार वाले, ८४६. लम्बौष्ठः—बड़े-बड़े ओठ वाले, ८४७. कुण्डली—कानों में कुण्डल धारण करने वाले, ८४८. चित्रमाली—चित्र-विचित्र पुष्पों की माला वाले, ८४९. योगविदांवरः—योगवेत्ताओं में श्रेष्ठ ॥१११॥

विपश्चित्कविरानन्दविग्रहोऽनलपशासनः ।

फाल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥११२॥

८५०. विपश्चित्कविः—तत्त्वज्ञ कवि, ८५१. आनन्दविग्रहः--मूर्तिमान् आनन्द, ८५२. अनलपशासनः-सबके ऊपर शासन करने वाले, ८५३. फाल्गुनीसूनुः—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण वे फाल्गुनीपुत्र हैं, ८५४. अव्यग्रः-कभी व्याकुल न होने वाले, ८५५. योगात्मा-योगस्वरूप, ८५६. योगतत्परः—योग में तत्पर रहने वाले ॥११२॥

योगविद् योगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ।
अकारादिहकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः ॥११३॥

८५७. योगवित् - योग के ज्ञाता, ८५८. योगकर्ता—योग को बनाने वाले, ८५९. योगयोनिः—योग को उत्पत्ति के कारण, ८६०. दिगम्बरः—दिशारूपी वस्त्रधारी, ८६१. अकारादिहकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः-सर्ववर्णस्वरूप ॥११३॥

उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः ।
श्लिष्टजङ्घः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥११४॥

८६२. उलूखलमुखः - ओखली के समान मुखारविन्द वाले, ८६३. सिद्धसंस्तुतः—सिद्धपुरुषों के द्वारा जिनकी सम्यक् रीति से स्तुति होती है, ८६४. प्रमथेश्वरः-भूतगणों के स्वामी, ८६५. श्लिष्टजङ्घः-सटी हुई जङ्घा वाले, ८६६. श्लिष्टजानुः—मिले हुए घुटनों वाले, ८६७. श्लिष्टपाणिः—मिले हुए हाथों वाले, ८६८. शिखाधरः-चोटी धारण करने वाले ॥११४॥

सुशर्मामितशर्मा च नारायणपरायणः ।
जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥११५॥

८६९. सुशर्मा-सुन्दर सुख वाले, ८७०. अमितशर्मा—असीम सुख वाले, ८७१. नारायणपरायणः-भगवान् नारायणस्वरूप, ८७२. जिष्णुः-जीतने वाले, ८७३. भविष्णुः—भविष्य में होने वाले, ८७४. रोचिष्णुः—कान्तिमान्, ८७५. ग्रसिष्णुः—सवसंहार करने वाले शिवरूप, ८७६. स्थाणुः—स्थिर रहने वाले ॥११६॥

हरिरुद्रानुसेकोऽथ कम्पनो भूमिकम्पनः ।
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागस्तुतिप्रियः ॥११६॥

८७७. हरिरुद्रानुसेकः—भगवान् विष्णु और शंकर का अभिषेक करने वाले, ८७८ कम्पनः—शत्रुओं को कम्पायमान करने वाले, ८७९. भूमिकम्पनः-पृथ्वी को कम्पित करने वाले, ८८०. गुणप्रवाहः—गुणों के प्रवाह, अर्थात् सर्वगुणसम्पन्न, ८८१. सूत्रात्मा-यज्ञोपवीतधारी, ८८२. वीतरागस्तुतिप्रियः—वीतराग पुरुष के द्वारा की गयी स्तुति जिन्हें प्रिय लगती है ॥११६॥

नागकन्याभयध्वंसी रुक्मवर्णः कपालभृत् ।
अनाकुलो भवोपायोऽनपायो वेदपारगः ॥११७॥

८८३. नागकन्याभयध्वंसी—नागकन्याओं के भय का ध्वंस करने वाले, ८८४. रुक्मवर्णः—सुवर्ण के समान वर्ण वाले, ८८५. कपालभृत्—कपाल धारण करने वाले महादेवस्वरूप, ८८६. अनाकुलः—व्यग्ररहित, ८८७. भवोपायः—भवसागर पार करने के लिये उपायरूप, ८८८. अनपायः—भगवान् श्रीरामसे कभी वियुक्त न होने वाले, ८८९. वेदपारगः—वेदों में पारंगत ॥११७॥

अक्षरः पुरुषो लोकनाथ ऋक्षप्रभुर्दृढ़ ।
अष्टाङ्गयोगफलभुक् सत्यसंधः पुरुष्टुतः ॥११८॥

८९०. अक्षरः—अविनाशी, ८९१. पुरुषः—बुद्धिरूपी पुरी में सोने वाले, ८९२. लोकनाथः—सम्पूर्ण लोकों के स्वामी, ८९३. ऋक्षप्रभु—नक्षत्रों के स्वामी अर्थात् चन्द्रस्वरूप, ८९४. दृढः—हृष्ट-पुष्टशरीर, ८९५. अष्टाङ्ग-योगफलभुक्—अष्टाङ्गयोग के फल का उपभोग करने वाले, ८९६. सत्यसंधः—दृढ़ मैत्री वाले, ८९७. पुरुष्टुतः देवताओं के द्वारा संस्तुत ॥११८॥

श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावणक्षमः ।
पञ्चाक्षरपरः पञ्चमातृको रंजनध्वजः ॥११९॥

८९८. श्मशानस्थाननिलयः—श्मशान में निवास करने वाले, ८९९. प्रेतविद्रावणक्षमः—प्रेत को तुरन्त भगाने में समर्थ, ९००. पञ्चाक्षरपरः—'नमः शिवाय' इस प्रधान पञ्चाक्षर मन्त्र को जपने वाले, ९०१. पञ्चमातृकः—सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति तथा अञ्जना—इन पाँच माताओं वाले, ९०२. रञ्जनध्वजः -लाल रङ्ग की ध्वजा वाले ॥११९॥

योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः ।
ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डो दशात्मकः ॥१२०॥

९०३. योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः—योगिनीवृन्द के द्वारा वन्दनीय शोभा-स्वरूप, ९०४. शत्रुघ्नः—शत्रुओं को हनन करने वाले, ९०५. अनन्त-विक्रमः—अपार पराक्रमशाली, ९०६. ब्रह्मचारी—ब्रह्म में विचरण करने

वाले, ९०७. इन्द्रियरिपुः—इन्द्रियों के शत्रु अर्थात् जितेन्द्रिय, ९०८. धृतदण्डः—दण्डधारी (गदाधारी), ९०९. दशात्मकः—दशावतारस्वरूप ।।१२०।।

अप्रपञ्चः सदाचारः शूरसेनाविदारकः ।
वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तद्वीपपतिन्धरः ।।१२१।।

९१०. अप्रपञ्चः—संसार के प्रपञ्च से रहित, ९११. सदाचारः—सदाचारयुक्त, ९१२ शूरसेनाविदारकः—शूर पुरुषों की सेना को विदीर्ण करने वाले, ९१३. वृद्धः—सब प्रकार से बड़े, ९१४. प्रमोदः—प्रमोदवृत्ति स्वरूप, ९१५. आनन्दः—आनन्दस्वरूप, ९१६. सप्तद्वीपपतिन्धरः—सप्तद्वीपपतियों को धारण करने वाले ।।१२१।।

नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ।
षट्चक्रधाम स्वर्लोकाभयकृन्मानदो मदः ।।१२२।।

९१७. नवद्वारपुराधारः-नवद्वार वाले पुर अर्थात् शरीरों के आधार, ९१८. प्रत्यग्रः—सबके आगे चलने वाले, ९१९. सामगायकः—सामवेद का गान करने वाले, ९२०. षट्चक्रधाम—सहस्रार आदि षट्चक्रों में परमात्म रूप से निवास करने वाले*, ९२१. स्वर्लोकाभयकृत्—स्वर्गलोक को अभय करने वाले, ९२२. मानदः-मान देने वाले, ९२३. मदः—सम्पूर्ण अहंकृतिरूप ।।१२२।।

सर्ववश्यकरः शक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः ।
अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुन्दरः ।।१२३।।

९२४. सर्ववश्यकरः—सबको वश में करने वाले, ९२५. शक्तिः—शक्तिस्वरूप, ९२६. अनन्तः—जिनके गुणों का अन्त नहीं है, ९२७. अनन्तमङ्गलः—जो अनन्त मङ्गलों से पूर्ण हैं, ९२८. अष्टमूर्तिः पञ्चभूत, सूर्य, चन्द्र और आत्मा—ये आठ जिनकी मूर्ति अर्थात् स्वरूप हैं, ९२९. नयोपेतः—नीतिमान्, ९३०. विरूपः—विविध रूप वाले, ९३१. सुरसुन्दरः-देवताओं से भी अधिक सुन्दर ।।१२३।।

---

*मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा-ये षट्चक्र है।

धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ।
नन्दिप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरुप्रियः ॥१२४॥

९३२. धूमकेतुः—अग्निस्वरूप, ९३३. महाकेतुः—विशाल बुद्धि वाले, ९३४. सत्यकेतुः—जिनका सत्य आदर्श है, ९३५. महारथः—महारथी, ९३६. नन्दिप्रियः—नन्दि (शिववाहन) जिनके प्रिय हैं, ९३७. स्वतन्त्रः—जो किसी के अधीन नहीं हैं, ९३८ मेखली—कटिसूत्र धारण वाले, ९३९. डमरुप्रियः—जिनको डमरु प्रिय है उस शिव के स्वरूप ॥१२४॥

लौहाङ्गः सर्वविद्धन्वी खण्डलः शर्व ईश्वरः ।
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥१२५॥

९४०. लौहाङ्गः—लोहे के समान दृढ़ शरीर वाले, ९४१. सर्ववित्—सब कुछ जानने वाले, ९४२. धन्वी—धनुर्धर, ९४३. खण्डलः—द्रोणगिरि को खण्डित कर लाने वाले. ९४४. शर्वः—शिवस्वरूप, ९४५. ईश्वरः—ईश्वरस्वरूप, ९४६. फलभुक्—फल खाने वाले वानर रूप, ९४७. फल-हस्तः—जिनके करकमल में फल है, ९४८. सर्वफलप्रदः—सब कर्मों का फल प्रदान करने वाले ॥१२६॥

धर्माध्यक्षो धर्मपालो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ।
पञ्चविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ॥१२६॥

९४९. धर्माध्यक्षः—धर्म-निधि के अध्यक्ष, ९५०. धर्मपालः—धर्म का पालन करने वाले, ९५१. धर्मः—धर्मस्वरूप, ९५२. धर्मप्रदः—न्याय धर्म के दाता, ९५३. अर्थदः—अर्थ प्रदान करने वाले, ९५४. पञ्चविंशति-तत्त्वज्ञः—पचीस तत्त्वों के यथार्थ ज्ञाता†, ९५५. तारकः—भवसागर से तारने वाले, ९५६. ब्रह्मतत्परः—ब्रह्म में तत्पर ॥१२६॥

त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुःखनिबर्हणः ।
ऊर्जस्वान् निष्कलः शली मौलिर्गर्जन्निशाचरः ॥१२७॥

९५७. त्रिमार्गवसतिः—ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग—इन

†पञ्च महाभूत, अहंकार, बुद्धि, मन, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच विषय और प्रकृति तथा चेतन—ये पञ्चविंशति तत्त्व हैं।

तीनों मार्गों के निवास-स्थल, ९५८. भीमः—भयंकरस्वरूप, ९५९. सर्वदुःखनिबर्हणः—सारे दुःखों को दूर करने वाले, ९६०. ऊर्जस्वान्—बलशाली, ९६१. निष्कलः—निर्गुण ब्रह्मस्वरूप, ९६२. शूली—शूल धारण करने वाले, ९६३. मौलिः-किरीट धारण करने वाले, ९६४. गर्जन्निशाचरः-रात्रि में गर्जते हुए विचरण करने वाले अर्थात् निःशङ्क ।।१२७।।

रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाल्यो विभूषणः ।
वनमाली शुभांगश्च श्वेतः श्वेताम्बरो युवा ।।१२८।।

९६५. रक्ताम्बरधरः-लाल वर्ण का वस्त्र धारण करने वाले, ९६६. रक्तः—लाल वर्ण वाले. ९६७. रक्तमाल्यः—लाल रङ्ग की माला वाले, ९६८. विभूषणः—अलंकारस्वरूप, ९६९. वनमाली—वन्य पुष्पों की माला पहनने वाले, ९७०. शुभाङ्ग—मङ्गलस्वरूप, ९७१. श्वेतः– श्वेतरूप, ९७२. श्वेताम्बरः-शुक्ल वर्ण का वस्त्र धारण करने वाले, ९७३. युवा—सदा तरुणस्वरूप ।।१२८।।

जयोऽजयपरीवारः सहस्रवदनः कपिः ।
शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभंजकः ।।१२९।।

९७४. जयः—विजेता, ९७५. अजयपरीवारः– जिसका विजय ही परिवार है, ९७६. सहस्रवदनः—सहस्र मुख वाले, ९७७. कपिः—कपिस्वरूप, ९७८. शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकः—शाकिनी, डाकिनी, यक्ष, राक्षस, भूत आदि का नाश करने वाले ।।१२९।।

सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।
शम्भुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवंगमः ।।१३०।।

९७९. सद्योजातः—तुरन्त प्रकट होने वाले, ९८०. कामगतिः—स्वच्छन्द घूमने वाले, ९८१. ज्ञानमूर्तिः—ज्ञान की साक्षात् मूर्ति, ९८२. यशस्करः—यशस्वी, ९८३. शम्भुतेजाः—भगवान् शंकर के समान तेजस्वी, ९८४. सार्वभौमः-सब संसार के अधिपति, ९८५. विष्णुभक्तः-भगवान विष्णु के भक्त, ९८६. प्लवङ्गमः-मर्कटस्वरूप ।।१३०।।

चतुर्नवतिमन्त्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ।
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानंगदप्रिय ईडितः ।।१३१।।

९८७. चतुर्नवतिमन्त्रज्ञः—चौरानबे मन्त्रों के ज्ञाता, ९८८. पौल-

स्त्यबलदर्पहा-रावण के बल के घमण्ड को नष्ट करने वाले, १८९. सर्वलक्ष्मीप्रदः--सारे ऐश्वर्य को प्रदान करने वाले, १९०. श्रीमान्--सर्वैश्वर्यशाली, १९१. अङ्गदप्रियः-अङ्गद के प्यारे, १९२. ईडितः—स्तुत्य ।।१३१।।

स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितो रुद्रश्च कामधुक् ।।१३२।।

९९३. स्मृतिबीजम्-स्मृतियों के बीज, ९९४. सुरेशानः-देवताओं के स्वामी, ९९५. संसारभयनाशनः-संसार के भय का नाश करने वाले, ९९६. उत्तमः-श्रेष्ठ, ९९७. श्रीपरीवारः-श्री (माता जानकी) के पुत्र, ९९८. श्रितः-आश्रयवान्, ९९९. रुद्रः--रुद्रस्वरूप, १०००. कामधुक्—सारी कामनाओं को पूर्ण करने वाले ।।१३२।।

इति मन्त्रमहार्णवे पूर्वखण्डे नवमतरङ्गे श्रीरामकृतं हनूमत्सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इस प्रकार मन्त्रमहार्णव-ग्रन्थ के पूर्वखण्ड के नवम तरङ्ग में श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा कथित 'हनुमतसहस्रनामस्तोत्र' समाप्त हुआ ।

["कल्याण" के सौजन्य से]

11587

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

□ शर्मा प्रिन्टर्स, इन्दौर